4. पहाड़ों के बीच बसा एक गांव पाहवाड़ी

इस पाठ के चित्रों को देखकर चर्चा करो कि तुम्हारे इलाके और पाहवाड़ी के बीच क्या-क्या अन्तर हैं।

सतपुड़ा के पहाड़

कोटगांव के दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत है - ऊंचा-नीचा, पथरीला, जंगलों से ढका। यहीं से तवा नदी बह कर आती है। उसमें सैकड़ों छोटी-बड़ी नदियों और नालों का पानी मिलता है। पृष्ठ 176 के चित्र में देखो कहां पहाड़ों की नदियां आकर तवा में मिल रही हैं।

चलो सतपुड़ा पहाड़ों पर जाकर देखें वहां लोग कैसे रहते हैं।

यहां रहने वाले आदिवासी अपने घर बार छोड़कर दूर-दूर के गांवों और शहरों में, सड़कों और रेल लाईनों पर काम करने जाते हैं। वे मैदान के गांवों में गेहूं की फसल काटने यानी चैत करने भी जाते हैं। क्या तुमने कभी सोचा कि ये लोग चैत करने क्यों जाते हैं?

क्या तुम्हारे यहां से भी लोग दूर-दूर मज़दूरी करने जाते हैं?

चित्र 1.सतपुड़ा पर्वतों पर जंगल

सतपुड़ा पहाड़ों की तरफ जाने के लिए हम होशंगाबाद से बैतूल की सड़क पर चले। मध्य प्रदेश के मानचित्र में देखो और बताओ हम किस दिशा में चले? थोड़ी दूर इटारसी के आगे तक नर्मदा नदी का मैदान है। फिर सड़क और रेल लाईन मोड़दार रास्ते से ऊपर पहाड़ पर चढ़ती है।

पहाड़ की ढलानों पर जंगल ही जंगल हैं। बीच-बीच में समतल भूमि भी है परन्तु कई जगह यह भी जंगलों से ढकी है। नर्मदा के मैदान की तरह यहां बड़े-बड़े इलाकों में खेती होती नहीं दिखती।

क्या यहां बहुत सारे लोग बस सकते हैं? ऐसे पहाड़ी प्रदेशों में जहां कहीं समतल भूमि है, वहां खेती के छोटे-छोटे हिस्से हैं, वहीं छोटे-छोटे गांव बस गए हैं। बीच-बीच में बहुत सी भूमि ऊंची-नीची, पथरीली और जंगली है। यहां पहाड़ी भूमि अब भी जंगलों से ढकी है, जबकि मैदानों में जंगल साफ

हो गए हैं और दूर-दूर तक खेती होती है।

इस अंश की चार मुख्य बातें चार वाक्यों में लिखो।

पाहवाड़ी का रास्ता

इटारसी से 50 किलोमीटर चलने पर माचना नामक पहाड़ी नदी मिलती है। यह तवा की सहायक नदी है। रास्ते में कई नदी-नाले पड़ते हैं, जिन पर पुलिया बनाकर सड़क डाली गई है। माचना के किनारे एक छोटा सा शहर बसा है - शाहपुर।

शाहपुर के आसपास बहुत से पहाड़ और जंगल हैं। इन्हीं के बीच एक कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है जिस पर हम पाहवाड़ी नामक गांव की ओर चले।

सड़क ऊबड़-खाबड़ है, कहीं उतार, कहीं चढ़ाव। अक्सर जहां सड़क उतरती है वहां किसी सूखे नाले में से होकर जाती है। कुछ नालों पर पुलिया है और कुछ पर नहीं। बरसात में ये नाले पानी से भर जाते हैं, तब शाहपुर से पाहवाड़ी जाना कठिन हो जाता है। ऐसे ही नाले मिट्टी, बालू और पत्ते बहाकर ले जाते हैं और नर्मदा नदी के मैदान में बिछाते जाते हैं।

पाहवाड़ी की भूमि

पाहवाड़ी की भूमि का यह चित्र देखो। कोटगांव से कितना भिन्न है। खेत भी ऊंचे-नीचे हैं, बीच-बीच में जंगली पेड़ उगे हैं। खेतों के बीच निचली भूमि पर नाले बह निकलते हैं। इनमें खेतों की मिट्टी बहकर चली जाती है और खेतों में बचती है बलुई, कंकड़-पत्थर वाली कम उपजाऊ मिट्टी। यहां की मिट्टी लाल और पीली है। मिट्टी की परत भी मोटी नहीं है। गांव में केवल कुछ भागों में, जो पहाड़ से दूर हैं, समतल भूमि है। वहां काली चिकनी मिट्टी मिलती है। चारों ओर पहाड़ों से पानी के साथ बहकर आई मिट्टी, इन निचले समतल भागों में इकट्ठी हो जाती है।

चित्र 2 में कम उपजाऊ ज़मीन किस अंक से दिखाई गई है? उपजाऊ मिट्टी किस अंक से दिखाई गई है?

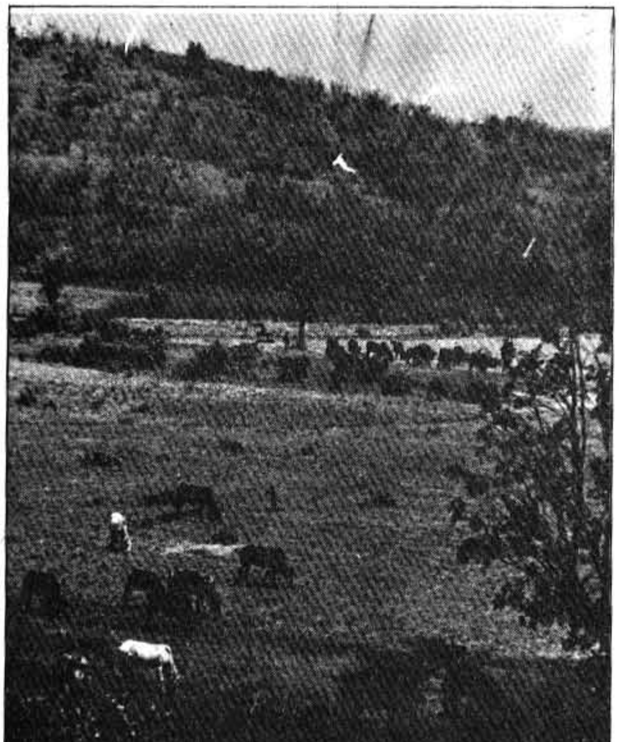

चित्र 2. पाहवाड़ी की भूमि

पहाड़ी भागों के खेतिहर प्रदेश की यह विशेषता है कि खेत-खेत के बीच मिट्टी फर्क हो जाती है। एक खेत में अगर काली मिट्टी है तो उसके बिलकुल पास के खेत में लाल या बलुई मिट्टी हो सकती है।

खाली स्थान भरो – पाहवाड़ी में ज़्यादातर ज़मीन ढलवां है और मिट्टी ———— है। जो हिस्से समतल हैं वहां मिट्टी ————है। क्या तुम जानते हो कि ढलवां ज़मीन पर कौन

चित्र 3. ऊबड़-खाबड़ और पथरीली ज़मीन

ली जातीं क्योंकि उसमें पानी भर जाता है, और इन फसलों की जड़ें सड़ जाती हैं। अब कुछ किसान काली मिट्टी में सोयाबीन बोने लगे हैं।

पहाड़ों पर खेती का भरोसा कम ही रहता है। पथरीली बलुई मिट्टी पर पैदावार कम रहती है और फिर बारिश का भी भरोसा नहीं है। कोदो कुटकी के लिये लगातार तीन महीने बारिश की ज़रूरत होती है। अगर कभी खूब बारिश एक साथ हो जाये या कई हफ्ते सूखा रहे तो ये फसलें नष्ट हो जाती हैं। तब जितना बीज बोया उतना अनाज भी नहीं मिलता।

सी फसलें हो सकती हैं? और समतल ज़मीन पर कौन सी फसलें हो सकती हैं?

पाहवाड़ी में गेहूं ज्यादा होता होगा या कोदो-कुटकी?

पाहवाड़ी की फसलें

बरसात में (खरीफ)– पाहवाड़ी में ज़्यादातर खेती बरसात में की जाती है – कोदो, कुटकी, ज्वार, तिल आदि फसलें उगाई जाती हैं। ये फसलें ढलवां भूमि पर, बलुई, लाल और पीली मिट्टी में उगाई जाती हैं, क्योंकि इस मिट्टी में से पानी बह जाता है। चिकनी काली मिट्टी में ये फसलें नहीं

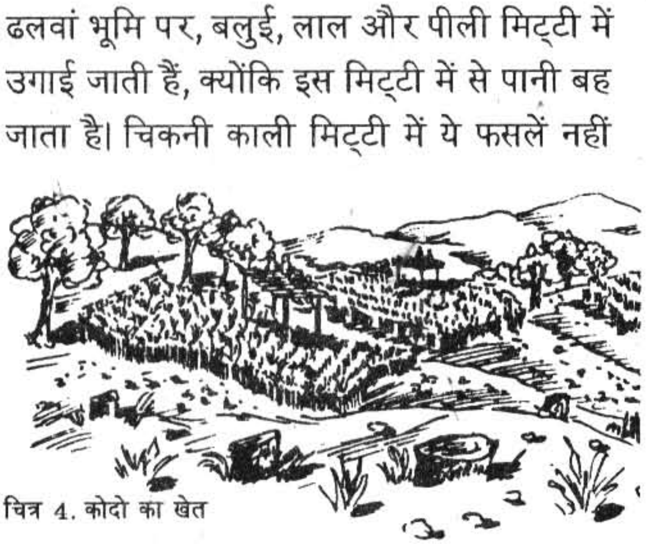

चित्र 4. कोदो का खेत

मिट्टी और पानी की दिक्कत के अलावा पहाड़ी खेती को एक और खतरा है।

पाहवाड़ी के चारों ओर जंगल हैं और उनमें जंगली पशु रहते हैं। कई जानवर, खासकर जंगली सुअर, खेतों को चरने आ जाते हैं। कभी-कभी तो वे इतना नुकसान करते हैं कि किसानों को कुछ नहीं मिल पाता है। इनसे बचाव के लिए किसान खेतों के बीच ऊंचे मचान बनाकर रखवाली करते हैं, और जानवरों को डराने के कई इन्तज़ाम करते हैं।

ज़मीन कमज़ोर होने के कारण पथरीली ज़मीन पर हर साल फसल भी नहीं उगाई जा सकती। एक साल फसल लेने के बाद भूमि को पड़ती छोड़ना पड़ता है। तभी उसमें इतनी **उर्वरता** हो पाती है कि अगली फसल ली जा सके। मान लो किसी के पास

20 एकड़ ज़मीन है। तो वह एक साल 10 एकड़ में बुआई करता है, फिर अगले साल दूसरे 10 एकड़ में बोता है। पर तुमने देखा कि कोटगांव में किसान एक ही खेत में साल में दो या तीन तक फसलें ले लेते हैं।

> *कोटगांव या पाहवाड़ी - कहां के किसानों को अधिक उपज मिलती है?*
>
> *पाहवाड़ी की ढलवां ज़मीन पर खेती करने की चार दिक्कतें बताओ।*

बाड़ा

पाहवाड़ी के किसान अपने पहाड़ी खेतों के बजाए अपने घर के साथ बने बाड़े पर ज़्यादा भरोसा करते हैं।

पाहवाड़ी के हर किसान के घर के साथ आधा-एक एकड़ का बाड़ा बना है। बाड़े के चारों ओर कंटीले झाड़ों की मज़बूत बागुड़ लगी है।

घर के आसपास समतल ज़मीन है इसलिए यहां मिट्टी भी अच्छी है। बाड़े में खाद आदि डालकर किसान इसकी मिट्टी और सुधार लेते हैं। बाड़े में जंगली जानवरों और पक्षियों से बचाव भी ज़्यादा कर पाते हैं।

कई किसानों के बाड़े में कुआं है और वे थोड़ी बहुत सिंचाई भी कर लेते हैं।

इस तरह बाड़ों में बरसात में मक्का और गिलकी, बरबटी, कद्दू जैसी सब्ज़ियां पैदा कर ली जाती हैं।

चित्र 5. घर के साथ लगा बाड़ा। बाड़े में ऊंची मचान है। चारों तरफ झाड़ियों की बाड़ है। इस बाड़े में गेहूं कट चुका है

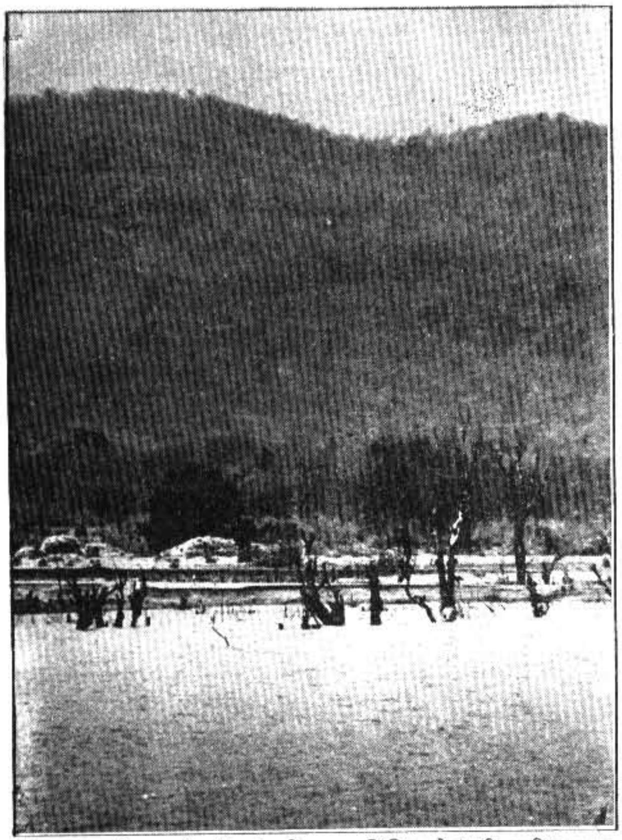

चित्र 6. चिलम टेकरी बांध के पास सिंचित गेहूं की कटी फसल

पहाड़ी खेतों से थोड़ी बहुत कोदों-कुटकी मिल जाती है और बाड़े से मक्का और सब्ज़ियां। कुछ महीनों का भोजन इस तरह जुट जाता है।

बाड़े और पहाड़ी खेत में क्या फर्क है, चर्चा करो।

जाड़े (रबी) की फसल

बरसात के बाद पहाड़ी खेतों की पथरीली मिट्टी में नमी नहीं बचती। इसलिए उन पर रबी में कोई फसल नहीं होती। पहाड़ी खेत खाली पड़े रहते हैं।

जाड़े में कुछ किसान अपने बाड़ों में गेहूं उगा लेते हैं। सेम की बेलें भी चढ़ा दी जाती हैं। सेम की हरी सब्ज़ी के अलावा बीज भी खाने के लिए सुखा कर रख दिए जाते हैं।

जिन किसानों के पास समतल ज़मीन और काली मिट्टी के खेत हैं वे अब सिंचाई का कुछ इंतज़ाम करके जाड़े में गेहूं, चना, अलसी और दालें उगाने लगे हैं। कोटगांव में ये फसलें बिना सिंचाई के भी हो जाती थीं, क्योंकि वहां की मिट्टी में बरसात के पानी की नमी बनी रहती है। पर, यह सुविधा पाहवाड़ी में कम है।

पाहवाड़ी की फसलों की तालिका भरो-

	जाड़े में	*बरसात में*
पहाड़ी खेतों में		
बाड़े में		
समतल खेतों मे		

चित्र 7. चट्टान खोद कर कुआं बनाते हुए

पीने का पानी और सिंचाई

पाहवाड़ी जैसी पथरीली भूमि पर कुएं खोदना बहुत कठिन और महंगा है। यहां मिट्टी की परत गहरी नहीं है और थोड़ा खोदने पर ही चट्टान निकल आती है। (चित्र 7 देखो) चट्टान को तोड़कर कुआं बनाने पर भी हमेशा पानी मिलने का भरोसा नहीं रहता। सोचो, यहां पीने के पानी की कितनी समस्या होगी। जहां बस्ती है वहां पहले एक ही कुआं था, अब वहां कई हैंड पंप लगा दिये गये हैं। कुछ आराम हुआ है।

सिंचाई के लिये पाहवाड़ी में 7-8 कुएं बन गए हैं लेकिन 3-4 कुओं में ही साल भर पानी रहता है। इनमें मोट चलते हैं। कुछ कुओं में डीज़ल पंप भी लग गए हैं। पाहवाड़ी के घरों में तो बिजली पहुंच गई है, मगर खेती के लिये बिजली नहीं है। इसलिए पानी खींचने की दिक्कत है। इस कारण यहां अभी तक सिंचित भूमि अधिक नहीं है।

चट्टान में कुआं खोदने के बजाए पहाड़ी इलाकों में पानी के लिए एक दूसरा इन्तज़ाम भी किया जाता है। यह है बरसात के पानी को तालाबों में इकट्ठा करके रखना।

पाहवाड़ी के आसपास नालों पर मिट्टी के बांध बनाकर कई छोटे **जलाशय** (तालाब) बनाए गए हैं। पहाड़ियों की ढलान के एक तरफ मिट्टी का बंधान बनाने से ढाल पर बहकर आया सारा पानी एक जगह इकट्ठा हो जाता है। ऐसे छोटे तालाबों से पंप की सहायता से पानी खींच कर सिंचाई की जाती है। कहीं-कहीं बांधों से नहरें भी निकाली गई हैं। पर यहां की ऊंची-नीची ज़मीन पर नहरों से खेतों तक पानी पहुंचाना मुश्किल हो जाता है।

पाहवाड़ी के पास एक बांध है, चिलम टेकरी। चिलम टेकरी बांध से पाहवाड़ी की लगभग 150 एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। (चित्र 6)

इस भूमि पर कौन-सी फसल होती होगी - खरीफ की या रबी की?
क्या कोटगांव के आसपास भी तुम्हें कई छोटे-छोटे तालाब मिले थे?
कोटगांव के लोग तालाब क्यों नहीं बनाते?
पाहवाड़ी में तालाब बनाने की क्या सुविधा है?
इनमें पानी कहां से और किस मौसम में आता है?

सतपुड़ा के जंगल

सतपुड़ा के जंगलों में सागौन जैसे कीमती लकड़ी के पेड़ हैं। कारखानों में लकड़ी की मांग के कारण व्यापारियों और ठेकेदारों द्वारा इन पेड़ों की बहुत कटाई होती थी। तब सरकार ने एक कानून बनाकर जंगल को काटने और जानवरों को मारने पर रोक लगाई। अब सरकार की आज्ञा लेकर ही ठेकेदार पेड़ काट सकते हैं।

सरकार भी पेड़ काट कर डिपो में रखती है और वहां से बेचती है। पाहवाड़ी के पास भौंरा नाम की जगह पर एक बड़ा वन डिपो है जहां सैकड़ों मोटे-पतले लट्ठे जमा किए गए हैं।

सरकारी रोकथाम और नियमों का असर पाहवाड़ी के लोगों पर भी पड़ा है।

चित्र 8. तेंदू पत्ता तोड़ा जा रहा है

पाहवाड़ी के आदिवासी और जंगल की चीज़ें

पाहवाड़ी में गोंड, कोरकू और परधान नामक आदिवासियों की संख्या काफी है। ये जनजातियां जंगलों के बीच छोटे-छोटे गांवों में रहती है। आदिवासियों का जंगलों से पुराना और घना संबंध है। पहले तो लोग जंगल से शिकार करके, फल मूल आदि इकट्ठा करके भोजन पा लेते थे। थोड़ी खेती करके अनाज आदि भी उगा लेते थे और जंगलों से पशुओं के लिये चारा भी मिल जाता था।

अब पहले जैसे इन लोगों को जंगलों से चीज़ें लाने की छूट नहीं है। वे जंगल से सिर्फ घरों में जलाने के लिये लकड़ी सिर पर उठाकर ला सकते हैं, इसके अलावा कुछ नहीं। घर बनाने के लिये बांस व लकड़ी उन्हें सरकारी डिपो से मिलती है।

पास के शाहपुर शहर में थोड़ी बहुत लकड़ी बेचकर कुछ पैसे कमाना भी लोगों के लिए कठिनाई का काम हो गया है।

पहले लोग पाहवाड़ी के जंगलों में चिरौंजी, जामुन, लाख, गोंद, शहद, झाड़ू बनाने की घास आदि भी इकट्ठा कर के बेचते थे। लेकिन अब ये चीज़ें भी **सरकारी संपत्ति** हैं। आदिवासी अब इन चीज़ों को सरकार से **लाइसेन्स** लिए बिना इकट्ठा नहीं कर सकते। पाहवाड़ी के जंगलों में तेंदू पेड़ की पत्तियां भी तोड़ी जाती हैं। ये पत्तियां बीड़ी बनाने के काम आती हैं। तेंदू पत्ते तोड़ने के काम में भी यहां के लोगों को कुछ मज़दूरी मिल जाती है।

महुआ

यहां जंगलों में होने वाले फल-फूलों में मुख्य है महुआ। तुमने महुए का फूल कभी खाया है? कितना मीठा और महकदार होता है! अप्रैल में जब महुआ के बड़े-बड़े पेड़ फूलते हैं तो जंगल महकने लगता है। इसको ताज़ा भी खाते हैं और सुखाकर भी खाते हैं। महुए से खाने की कई चीज़ें भी बनाते हैं। पाहवाड़ी के आसपास महुए के पेड़ बहुत से हैं। एक परिवार के लोग महुआ फूलने के मौसम में 2-3 क्विंटल तक महुआ बीन लेते हैं। महुआ बाज़ार में बेचकर ये लोग अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदते हैं। मई-जून में महुए का फल – जिसे गुल्ली कहते हैं, तैयार हो जाता है। इसका तेल निकाला जाता है। इसे भी लोग इकट्ठा

चित्र 9. महुए का फूल

चित्र 10. महुए का पेड़

करके बेचते हैं। महुए का तेल साबुन बनाने के काम में भी आता है और खाने के काम भी आता है।

इस तरह यहां लोग जंगल पर काफी निर्भर हैं। वे कमज़ोर खेती की कमी जंगल की मदद से पूरी करने की कोशिश करते हैं। जंगल की चीज़ें बेचकर और जंगल में मज़दूरी कर के वे दो पैसे कमाते हैं और पेट भरने का अनाज तेल खरीदते हैं।

पाहवाड़ी के लोगों को जंगल से क्या-क्या सहायता मिलती है?

क्या कोटगांव के लोग भी इसी तरह जंगलों पर निर्भर हैं?

जंगल सरकारी संपत्ति होने से पाहवाड़ी के लोगों को जंगल का उपयोग करने में किस तरह की कठिनाइयां हो गई हैं? 1) भोजन की चीज़ों की 2) मकान बनाने की चीज़ों की 3) बाज़ार में बेचने की चीज़ों की – इनकी सूची बनाओ।

पशुपालन

पाहवाड़ी में लगभग सभी परिवारों के पास 5-6 या अधिक पशु हैं – गाय, बैल, भैंस आदि। कुछ लोग बकरी और मुर्गी भी पालते हैं। पहले आसपास के जंगलों में पशु आराम से चरते थे। अब पशु चराने के लिये सरकार से लायसेन्स लेना पड़ता है। गांव का एक व्यक्ति सभी के पशु लेकर जंगल जाता है और शाम को उन्हें वापिस लाता है। कुछ चारा खेतों से भी मिल जाता है। इसलिए कोटगांव के समान यहां हरे चारे की कमी नहीं होती।

अब पाहवाड़ी में पशुपालन बढ़ रहा है। यहां से अंडे, दूध, बकरियां आदि बाज़ार में बिकने जाती हैं। दूध तो शाहपुर में बिक जाता है, पर अंडे सारणी

चित्र 11. जलाऊ लकड़ी बीनकर ला रहे हैं

तक जाते हैं। यहां अभी अच्छी नस्ल के पशु नहीं आए हैं। अधिकतर **स्थानीय नस्ल**की छोटी-छोटी गाएं हैं। उनसे दूध बहुत अधिक नहीं मिलता।

क्या तुम कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हो कि यहां के लोगों को क्या सुविधायें मिलें तो यहां दूध, अंडे आदि का धंधा बढ़ सके?

घर

आओ देखें, ये लोग घर किन चीज़ों से बनाते हैं। कोटगांव के घरों में मिट्टी और मिट्टी से बनी ईंट और कवेलू घर बनाने की मुख्य चीज़ें थीं। पाहवाड़ी के घरों में लकड़ी का उपयोग खूब होता है। यहां अधिकांश घर ऐसे हैं, जिनमें बांस या

चित्र 12. पाहवाड़ी के घर

लकड़ी का टट्टर बनाकर, उस पर मिट्टी का लेप करके दीवारें बनाई जाती हैं। बांस और बल्लियों से छत पर ठाठ बनाया जाता है। बांस बांधने के लिए लोग अक्सर पेड़ की जड़ से रस्सी जैसा रेशा निकाल कर बांधते हैं। कुछ लोग तार भी बांधने लगे हैं। ठाठ पर कवेलू बिछे हैं। कवेलू छोटे और टेढ़े मेढ़े हैं। ये कवेलू यहां के लोग स्वयं बना लेते हैं। तुम्हें याद होगा कि कोटगांव के पास कवेलू का कारखाना लगा है। यहां से अच्छे, बड़े-बड़े पक्के कवेलू वहां के लोगों को मिल जाते हैं।

लोगों की जीविका की समस्या

पाहवाड़ी के आदिवासियों को, अब जंगल से बहुत भोजन नहीं मिल पाता। यहां के खेत भी कमज़ोर हैं इसलिए, यहां के खेतों पर ज़्यादा मज़दूरी भी नहीं मिलती। यही कारण है कि बुवाई और कटाई के समय बहुत से लोग चैत करने मैदान के गांवों में चले जाते हैं। या, अन्य कामों की तलाश में निकल पड़ते हैं। शाहपुर और भौंरा भी जाते हैं। भौंरा में **रोपणी** और लकड़ी का सरकारी डिपो है। वहां भी उन्हें काम मिल जाता है। इस तरह जीविका की कमी के कारण पाहवाड़ी के लोग साल भर अपने घरों में नहीं रह पाते।

• • • • • • • • • •

अभ्यास के प्रश्न

1. पाहवाड़ी के लोगों को आने जाने में क्या कठिनाई होती है?
2. पाहवाड़ी के किसान उसी खेत में हर साल फसल क्यों नहीं ले पाते? सिर्फ चार लाईनों में लिखो।
3. पाहवाड़ी जैसे पहाड़ी प्रदेश में कुएं बनाना क्यों कठिन और महंगा है?
4. पाहवाड़ी से कोटगांव की तरह बहुत उपज बाज़ार नहीं जाती है, ऐसा क्यों है?
5. मैदानी और पहाड़ी इलाकों के बीच जो फर्क है, उन्हें समझाते हुए दस वाक्य लिखो।
6. कोटगांव के चित्र 10 व पाहवाड़ी के चित्र 5 में तुम्हें क्या फर्क दिख रहा है? इस फर्क का क्या कारण है?